धारावाहिक, बच्चे और टेलीविजन

एक अंतःक्रिया

मिली भटनागर

"आज के दौर में बच्चे टेलीविजन के साथ किस तरह अंतःक्रिया करते हैं? इस अंतःक्रिया में बच्चों की भूमिका क्या होती है? टेलीविजन देखने के दौरान बच्चे धारावाहिक की कहानी को किस तरह ग्रहण करते हैं? और टेलीविजन बच्चों के जीवन में किस तरह शामिल है? आदि सवालों का जवाब तलाश करता मिली भटनागर का यह आलेख एक छोटे से शोध पर आधारित है।"

भारतीय परिप्रेक्ष्य में टी.वी. को लेकर ज्यादातर चिंतन धारावाहिकों के विषय-वस्तु पर सिमट जाता है। प्रसिद्ध भारतीय धारावाहिक अपनी विषय-वस्तु के लिए काफी आलोचना सह रहे हैं। कहानियों का कलात्मक स्तर काफी नीचे जा चुका है। निश्चित ही यह धारावाहिक सामाजिक पूर्वाग्रहों को अपना ढांचा बनाकर कहानी को आगे बढ़ाते हैं। खासकर औरतों और पुरुषों के लिंग व्यवहार में गहराई नहीं दिखाई जाती, बल्कि रूढ़िवादी लिंग व्यवहार को हमेशा बढ़ावा दिया जाता है। ऐसे में जाहिर है यह चिंता होती है कि हमारे बच्चों पर प्रसिद्ध धारावाहिकों का क्या प्रभाव पड़ रहा है।

एक कार्यक्रम की अवधि कम से कम आधा घंटा होती है। सोचने वाली बात है कि क्या इस आधे घंटे की टी.वी. देखने की पूरी प्रक्रिया में सिर्फ धारावाहिक की कहानी महत्वपूर्ण है? इस प्रश्न को समझने के लिए दूसरा प्रश्न करते हैं। एक फिल्म सिनेमाघर में भी देखी जा सकती है और घर में टी.वी. पर भी। पर क्या हम एक ही फिल्म की कहानी को दोनों माध्यम से एक जैसा ही ग्रहण करते हैं? नहीं। तो क्या इसका मतलब यह है कि सिर्फ विषय-विस्तु ही नहीं, मीडिया के माध्यम पर भी यह निर्भर करता है कि हम किसी कहानी की क्या समझ बनाते हैं। जरा और बारीकी से सोचते हैं। अगर दो बच्चे साथ में एक ही धारावाहिक देखें तो क्या दोनों कहानी की एक ही समझ बनाएंगे? नहीं। पियाजे के काम ने काफी गहराई से यह समझाया है कि बच्चे निष्क्रिय नहीं होते हैं। वह सक्रियता के साथ अपने वातावरण में हो रही गतिविधियों की समझ विकसित करते हैं। तो क्या यह बात घर के बैठक में जहां टी.वी. देखा जाता है, उतनी ही वैध नहीं है जितनी कि एक कक्षा में? इसलिए जब हम मानते हैं कि धारावाहिक का बच्चों पर प्रभाव पड़ता है तब हम बच्चे की भूमिका को निष्क्रिय मान लेते हैं। बच्चों पर धारावाहिक का असर नहीं पड़ता बल्कि बच्चे धारावाहिक को सक्रियता के साथ देखते हैं, इसलिए बच्चे धारावाहिक की कहानी को ग्रहण करते हैं। टी.वी. देखने की पूरी प्रक्रिया में तीन बातें महत्वपूर्ण हैं धारावाहिक, टी.वी. और बच्चा खुद।

“ अभी तक हुए अध्ययनों पर नजर डालते हैं तो पाते हैं कि इस प्रक्रिया को समझने की कोशिश नहीं हुई है। ज्यादातर अध्ययनों में बच्चों, माता-पिता तथा शिक्षकों से प्रश्न पूछकर, वो भी तब जब बच्चा टी.वी. देख भी नहीं रहा होता, यह पता लगाने की कोशिश की जाती रही है कि धारावाहिकों का बच्चों पर क्या असर पड़ता है। ”

मीडिया जगत के प्रभावशाली चिंतकों में से एक मार्शल मैक्लुहान थे। उनके मुताबिक मीडिया मानव जीवन में सामाजिक व मनोवैज्ञानिक बदलाव पैदा करता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कोई भी मीडिया व्यक्ति के शरीर में प्रसार (extension) पैदा करता है। उदाहरण के लिए मशीनरी, मशीनरी, आने से पहले व्यक्ति सारा कार्य खुद के शरीर से करते थे। जब मशीनरी आई तो हर कार्य के लिए अलग मशीन बनी जो कि एक बार में शरीर के कुछ विशिष्ट अंगों के द्वारा ही संचालित हो सकती है। इसलिए मशीनरी ने मानव जीवन में विखंडन (fragmentation) पैदा किया।

तो जब शरीर के एक हिस्से का प्रसार होता है, तब शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है। संतुलन वापिस पाने के लिए व्यक्ति का शरीर प्रतिक्रिया देता है। अब किस हिस्से में प्रसार होगा और संतुलन कैसे वापिस पाया जाएगा, यह निर्भर करता है मीडिया के माध्यम पर। मैक्लुहान ने इसे ऐसे रखा, ‘‘माध्यम ही संदेश है’’, विषय वस्तु हमें संदेश के ऊपर ध्यान देने से भटका देती है।

इन सभी बातों का सार यह निकल कर आता है कि धारावाहिक देखने की प्रक्रिया में धारावाहिक, टी.वी. व बच्चे की अपनी भूमिकाएं होती हैं, जिनका अवलोकन अपनी स्वाभाविक परिस्थिति में करना चाहिए। पर जब हम अभी तक हुए अध्ययनों पर नजर डालते हैं तो पाते हैं कि इस प्रक्रिया को समझने की कोशिश नहीं हुई है। ज्यादातर अध्ययनों में बच्चों, माता-पिता तथा शिक्षकों से प्रश्न पूछकर, वो भी तब जब बच्चा टी.वी. देख भी नहीं रहा होता, यह पता लगाने की कोशिश की जाती रही है कि धारावाहिकों का बच्चों पर क्या असर पड़ता है। इसलिए इस प्रक्रिया को समझने के लिए एक छोटा सा अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे-

- स्वाभाविक सेटिंग में धारावाहिक देखने की प्रक्रिया के दौरान हो रही अंतःक्रियाओं का विश्लेषण करना
- अंतःक्रिया में बच्चे, टी.वी. व धारावाहिक की भूमिका को समझना
- बच्चे प्रसिद्ध धारावाहिकों की कहानियों का क्या अर्थ निकालते हैं समझना

अध्ययन की विधि

इस अध्ययन की संकल्पना इस तरह की गई थी कि बच्चों के साथ मिलकर टी.वी. देखने की प्रक्रिया का अनुभव किया जा सके। इस अध्ययन में माता-पिता एवं शिक्षकों को शामिल नहीं किया गया था और बच्चों से उनके सामने बात नहीं की गई। दो विधियों का प्रयोग किया गया- साक्षात्कार और अवलोकन। साक्षत्कार को इसलिए चुना गया ताकि यह पता किया जा सके कि बच्चे की धारावाहिक अथवा टी.वी. देखने की प्रक्रिया के बारे में खुद की क्या समझ है। साक्षात्कार के लिए पहले से ही प्रश्न तैयार कर लिए गए थे। विशेष रूप से ऐसे प्रश्न बनाए गए थे जिनसे यह पता किया जा सके कि बच्चे को धारावाहिक में क्या पसंद और क्या नापसंद है तथा वह कहानी पर कहां और कितना ध्यान देता है। यह भी पता चल सके कि वह टी.वी. देखने के दौरान क्या क्रियाएं करता है। अवलोकन को इसलिए चुना गया ताकि शोधकर्ता स्वयं इस प्रक्रिया का अनुभव कर पाए। इस विधि में यह भी किया जा सकता था कि साक्षात्कार में मिले जवाब कितने सही थे।

साक्षात्कार की जगह एवं तरीका

क्योंकि अध्ययन का एक बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा था टी.वी. देखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक सेटिंग में अनुभव करना, इसलिए शोध कर्ता ने बच्चों के घरों में जाकर साथ में उनका मनपसंद धारावाहिक देखा। इस दौरान बच्चे का व्यवहार व कमरे में हो रही सभी गतिविधियों को नोट किया गया। धारावाहिक समाप्त होते ही बच्चों को अकेले में ले जाकर साक्षात्कार लिया गया। साक्षात्कार तुरंत बाद इसलिए लिया गया ताकि बच्चों का टी.वी. देखने का अनुभव ताजा रहे।

बच्चों का चयन

क्योंकि इस अध्यय का उद्देश्य बच्चों के टी.वी. देखने की प्रक्रिया की समझ बनाना था, सामान्यीकरण नहीं व अध्ययन को छः महिने के भीतर समाप्त करना था, इसलिए एक छोटा सैम्पल चुना गया। सैंपल इस प्रकार था- 11-13 वर्षीय उम्र के दस बच्चे जिनमें पांच लड़के व पांच लड़कियों को चुना गया। सभी से उनके साथ अध्ययन करने की अनुमति मांगी गई। सभी बच्चे गाजियाबाद शहर के रहने वाले थे व वहीं के विद्यालयों में पढ़ रहे थे। सभी अंग्रेजी माध्यम प्राईवेट विद्यालयों में पढ़ रहे थे और सभी मध्यमवर्गीय परिवार से आते थे।

विश्लेषण

कौन से धारावाहिक देखे गए

सभी बच्चों ने कहा कि वह एक दिन में चार से अधिक धारावाहिक नहीं देखते। एक बच्चा सात कार्यक्रम देखता था, परन्तु उनमें से पांच कार्टून थे और दो धारावाहिक। सभी अलग-अलग धारावाहिक देख रहे थे, कुछ ही धारावाहिक थे जो कि सब में सामान्य थे। इन धारावाहिकों को देखने के कारण भी अलग-अलग थे, परन्तु अधिकतर कारणों में एक बात सामान्य थीः धारावाहिक में हास्य का मौजूद होना। बच्चों को यह भली भांति ज्ञात था कि धारावाहिक का पुनः प्रसारण किस समय होता था और जब भी संभव हो, वह पुनः प्रसारण देख लेते थे।

टी.वी. नेटवर्क पर अनेक चैनलों की उपस्थिति दर्शकों को अनेक विकल्प प्रदान करती है। इन बच्चों के पास भी कई विकल्प मौजूद थे। तारक मेहता का उल्टा चश्मा जो कि मध्यम वर्गीय परिवारों के रोजमर्रा के जीवन व पड़ोसियों के साथ परस्पर क्रिया पर आधरित था व हास्य शैली का धारावाहिक था। दस में से सात बच्चे देखते थे व पसंद करते थे।

धारावाहिक तालिका

- अकबर बीरबल
- मेरे रंग में रंगने वाली
- घर जमाई
- महाकुंभ
- तारक मेहता का उल्टा चश्मा
- कुमकुम भाग्य
- जोधा अकबर
- कुबूल हैं
- निशा और उसके कजिन्स
- तू मेरा हीरा
- मेरी आशिकी तुमसे ही
- ये है मोहब्बतें
- इस प्यार को क्या नाम दूं
- चिड़िया घर
- सड्डा हक
- यम हैं हम
- शास्त्री सिस्टर्स
- बड़ी दूर से आए हैं।

"बच्चों के सबसे ज्यादा नापसंद किरदार भी अधिकतर पुरुष थे। इन किरदारों को धारावाहिक में ज्यादातर बुरे काम करते हुए दिखाया गया था। वह हमेशा हीरो-हीरोईन के खिलाफ चालबाजी करते थे, लोगों को उनके खिलाफ भड़काते थे और हमेशा उन्हें परेशान करते रहते थे।"

किस पर जोर दिया गया

कौन हीरो है और कौन हीरोईन, यह बात बच्चों को स्पष्ट रूप से मालूम थी। उनके हिसाब से पूरे धारावाहिक में एक या ज्यादा से ज्यादा दो हीरो थे और एक हीरोईन। बच्चों ने बताया कि शीर्षक से साफ हो जाता है कि धारावाहिक के कौन से किरदार हीरो-हीरोईन हैं, व यह कोई बड़ी बात नहीं है, ''अपने आप पता चल जाता है।'' उन्होंने इन हीरो-हीरोईन को वास्तविक नाम की जगह उनके किरदारों के नाम से संबोधित किया। जब वो किसी और से धारावाहिक के बारे में चर्चा करते थे, तब भी किरदारों का ही नाम उपयोग करते थे, वास्तविक नाम नहीं। जैसे कि एक धारावाहिक में नई नायिका का प्रवेश हुआ और बच्चे ने उसे पहचान लिया। उसकी मां ने पूछा ''कौन है यह?'' तो उसने जवाब में नायिका के पूर्व धारावाहिक में किरदार का जो नाम था, वह लिया।

बच्चों से पूछा गया था कि धारावाहिकों में हीरो-हीरोईन क्या करते हैं। इन धारावाहिकों में से किसी में हीरो एक राजा था जो न्याय करता था, किसी में एक दरबारी था जो समझदार था, कहीं एक आदमी जो कार चालक से बढ़ा व्यापारी बन गया, किसी में एक आदमी जिसकी खुद की इलैक्ट्रॉनिक्स की दुकान थी, कहीं एक सूत्रधर था जो सबकी परेशानी हल करता था। यहां तक कि हीरो एक ऐसा आदमी भी था जो कुछ भी नहीं करता था फिर भी लड़कियां उसके पीछे पड़ी रहती थीं। इन सभी में जो गुण सामान्य थे वो यह कि हीरो हमेशा उच्च या उच्च-मध्यम आर्थिक श्रेणी का सफल व्यक्ति था जो कभी गलत काम नहीं करता था। इसी के बरक्स किसी में हीरोईन एक महिला थी जो अपने पति को परेशान करती रहती थी, तो किसी में एक ऐसी महिला थी जो अपने पति को सांत्वना देती थी व खुद की भावनाओं को नियंत्रित रखती थी, कहीं एक गृहणी थी जो स्वादिष्ट भोजन पकाती थी, किसी में एक भोली, समझदार लड़की थी जो हीरो को प्यार करती थी, यहां तक कि ऐसी महिला भी थी जो पहले तो अच्छी नौकरी करती थी पर अब हीरो की पत्नी बनकर रह गई। इन सभी महिलाओं में सामान्य बात यह थी कि वे कामकाजी महिला नहीं थीं। सभी बच्चों ने हीरोईनों की पहचान को हीरो से जोड़ा था, जो कि सभी बताये गए किरदारों में उनके पति थे। हीरोईन भी एक उच्च या उच्च-मध्यम आर्थिक श्रेणी से आती थी।

बच्चों से यह भी पूछा गया था कि वह धारावाहिक में किसे पसंद और नापसंद करते है। सभी के पसंदीदा किरदार ज्यादातर पुरुष थे। इनमें से आधे बच्चों को एक महिला किरदार भी बेहद पसंद था, परन्तु इसके साथ उन्हें उनका पुरुष साथी भी उतना ही पसंद था। किसी को भी दो से ज्यादा किरदार पसंद नहीं थे। उल्लेखनीय है कि यह सभी पसंदीदा कलाकार धारावाहिकों के हीरो, हीरोईन थे। इन किरदारों को पसंद करने के सभी बच्चों के अपने अलग कारण थे। लेकिन यह सभी कारण किरदारों की अच्छाई या अच्छा काम करने की क्षमता की तरफ इशारा कर रहे थे। जैसे कि पुरुष किरदारों को पसंद करने के कुछ कारण थे उनका हास्यास्पद होना, अपने परिवार के लिए त्याग करना, यहां तक कि उनका स्वादिष्ट भोजन पसंद करना। महिला किरदारों को पसंद करने के कारण थे उनका शांत स्वभाव का होना या सुंदर कपड़े पहनना। एक बच्चे ने सीधे-सीधे यह जवाब दिया कि उसे हीरो-हीरोईन इसलिए सबसे ज्यादा पसंद थे क्योंकि वह धारावाहिक के मुख्य कलाकार थे। बच्चों के सबसे ज्यादा नापसंद किरदार भी अधिकतर पुरुष थे। इन किरदारों को धारावाहिक में ज्यादातर बुरे काम करते हुए दिखाया गया था। वह हमेशा हीरो-हीरोईन के खिलाफ चालबाजी करते थे, लोगों को उनके खिलाफ भड़काते थे और हमेशा उन्हें परेशान करते रहते थे। आठ बच्चों ने पूरे धारावाहिक में सिर्फ एक ही किरदार को नापसंद किया। इन किरदारों को नापसंद करने का मुख्यतः एक ही कारण दिया कि ''वह बुरे हैं''।

यह सवाल भी किया गया कि धारावाहिक में सबसे सुंदर कपड़े कौन पहनता है। तीन बच्चों ने किसी का भी नाम नहीं लिया और कहा कि वो इस चीज पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। बाकियों ने जिस भी किरदार का नाम लिया वो उनके खुद के लिंग का था। यह सभी किरदार भी धारावाहिक के हीरो-हीरोईन थे।

जब बच्चों से बोला गया कि समझाएं कि उस दिन के धारावाहिक में क्या-क्या हुआ तो सिर्फ एक बच्चे ने कहानी को बारिकी से सुनाया। बाकी सभी ने कहानी सुनाने के लिए कुछ हिस्से चुने। सभी ने कहानी के वो अंश चुने जो कि मुख्य पात्रों पर आधरित थे। धारावाहिक का कोई भी ऐसा दृश्य नहीं चुना गया जहां पर हीरो-हीरोईन शारीरिक रूप से मौजूद नहीं थे। बचे हुये दृश्यों में से भी सिर्फ उन्हीं दृश्यों को चुना गया जिनमें कोई साजिश रची गई थी या कोई विवाद हुआ था। किसी भी दृश्य में हुई बातचीत को बारिकी से नहीं बताया गया। धारावाहिक के पहले दृश्यों का जिक्र किसी ने भी नहीं किया। सभी ने अपनी खुद की भाषा का उपयोग किया, धारावाहिक में बोले गए संवादों का नहीं। मुख्य किरदारों का नाम उन्होंने वैसे का वैसा ही लिया परन्तु बाकी किरदारों को उनके हीरो-हीरोईन से जो संबंध था, उस नाम से संबोधित किया। जैसे कि टीटू की चाची, रनवीर की मां आदि जबकि इन किरदारों के नाम दृश्य में लिए गए थे। कुछ बच्चों ने दृश्यों में से कुछ ऐसे शब्द चुने, जो कि उनके खुद के संदर्भ में आम नहीं थे। जैसे की कबिला, वलिहाद आदि। एक बच्चे ने मुगल सम्राट के बारे में अपनी खुद की जानकारी को कहानी सुनाते वक्त इस्तेमाल किया, जबकि वह हिस्सा धारावाहिक में नहीं दर्शाया गया था।

"बच्चों से यह भी पूछा गया कि अगर वे कहानी के मुख्य पात्र होते तो क्या करते। सभी जवाबों में एक बात सामान्य थी कि वे लोग ''अच्छा व्यवहार'' करते व किसी भी विवाद को होने से पहले रोक देते।"

बच्चों से यह भी पूछा गया कि अगर वे कहानी के मुख्य पात्र होते तो क्या करते। सभी जवाबों में एक बात सामान्य थी कि वे लोग ''अच्छा व्यवहार'' करते व किसी भी विवाद को होने से पहले रोक देते।

इन सभी बातों से यह पता चलता है कि बच्चे पूरे धारावाहिक में सबसे ज्यादा ध्यान हीरो-हीरोईन पर दे रहे थे। वो क्या करते हैं, क्या पहनते हैं, कौन सी परेशानियों का सामना करते है, यह सब उन्हें पता था। उनके हीरो-हीरोईन हमेशा सही काम करते थे और अंत में सफल हो जाते थे। उन्होंने हीरो-हीरोईन की पहचान को लिंग संबंधित रूढ़िवादी पैमानों पर ही व्यक्त किया। बच्चों ने पूरी कहानी पर एक जैसा ध्यान नहीं दिया। उन्होंने उन दृश्यों पर ज्यादा ध्यान दिया जहां पर कोई साजिश थी या कोई विवाद हुआ। उन्होंने पूरी कहानी को नैतिक सही और गलत के ढांचे के भीतर रहते हुए जांचा।

विज्ञापन के दौरान क्या हुआ

बच्चों से यह पूछा गया था कि धारावाहिक के बीच कितनी बार और कौन से विज्ञापन आते हैं। किसी ने भी इसका सही जवाब नहीं दिया। एक बच्चे ने सीधे बोला कि उसने कभी यह गिनती नहीं की। किसी को भी सात से ज्यादा विज्ञापनों के नाम याद नहीं थे। नाम बोलते वक्त उन्होंने वस्तु का नाम व ब्रांड दोनों उपयोग किए। जैसे कि कोलगेट, आईडिया, कटी ऐड़ियों वाला, कार पॉलिसी का, चीजी पीजा रेगुलर साईज, आलिया भट्ट का स्कूटी वाला आदि। उन्होंने किसी भी ऐसे विज्ञापन का नाम नहीं लिया जिसका उनकी जिंदगी में कोई संदर्भ या उपयोग न हो।

किसी भी और गतिविधि से अधिक, विज्ञापन साधन बनते थे धारावाहिक की कहानी की लय को तोड़ने का। इसलिए बच्चे भी कहानी के अर्थ का निर्माण निरंतरता (continuation) में नहीं कर पाते थे। जैसे ही विज्ञापन आता था बच्चे दूसरे कार्यक्रम देखने लग जाते थे। अगर वो कार्यक्रम नहीं बदलते थे तो टी.वी. की ध्वनि कम कर देते थे। स्क्रीन पर प्रदर्शित टाइमर उन्हें धारावाहिक को वापिस समय पर लगाने में मदद कर देता था। अगर विज्ञापन अन्य किसी कार्यक्रम के बारे में होता था तो उसे पूरा देखकर ही दूसरा कार्यक्रम लगाया जाता था। उन्होंने विज्ञापन का समय बाहर आने-जाने व अन्य कार्य करने के लिए भी उपयोग किया।

यह दर्शाता है कि धारावाहिक को कभी एक लय में नहीं देखा गया। न सिर्फ लय टूटती थी, बल्कि विज्ञापनों के दौरान ध्यान दूसरी जगहों पर भी केंद्रित हो जाता था।

टी.वी. देखते वक्त भी बच्चे अपनी सामाजिक भूमिकाओं में बंधे हुए होते हैं। वह प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं, लिंग व्यवहार करते हैं यहां तक कि एक मेजबान की भूमिका भी निभाते हैं।

...धारावाहिक टी.वी. में आ रही एक असत्य वास्तविकता नहीं रह जाता, बल्कि घर परिवार के यथार्थ के साथ सतत रूप में शामिल हो जाता है।

बच्चे इस बात का चयन करते थे कि कौन-सा कार्यक्रम देखा जाए। विज्ञापनों पर उनका ध्यान कम था।

टी.वी. कहां और कैसे देखा जाता है-

सभी बच्चों के घरों में टी.वी. बैडरूम या बैठक में रखा हुआ था। कमरों में काफी सामान था तथा ज्यादातर खाली जगह फर्नीचर ने घेर रखी थी। जिससे घूमने फिरने की जगह कम बची थी। जब भी कोई व्यक्ति कमरे में चहल-पहल करता था तब वो ज्यादातर टी.वी. और बच्चे के बीच में आ जाता था। अधिकतर टी.वी. कोने में किसी ट्रॉली पर रखा होता था। उसके ऊपर ढंकने के लिए एक कपड़ा होता था जो ऊपर की स्क्रीन का कुछ हिस्सा ढंक देता था। कुछ छोटी-मोटी सजावट की वस्तुएं आस-पास या टी.वी. के ऊपर रखी होती थीं। इन सभी चीजों पर टी.वी. देखते समय नजर आसानी से जा सकती थी। टी.वी. हमेशा रोशनी में देखा जाता था, अंधेरे में नहीं। इससे यह पता चलता है कि बच्चे की आंख को टी.वी. स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए आस-पास में मौजूद सभी नजारों की उपेक्षा करनी पड़ती थी। टी.वी. की ध्वनि एक ऐसे स्तर पर होती थी कि कमरे में मौजूद अन्य आवाजें भी सुनी जा सकें। एक धारावाहिक के दौरान ध्वनि को समय-समय पर कम या ज्यादा किया जाता था, खासकर विज्ञापन के दौरान ध्वनि को कम ही रखा जाता था। आधे घंटे के एक कार्यक्रम में टी.वी. की आवाज ही एकमात्र आवाज नहीं होती थी। व्यक्तियों की बातचीत, बाहर खड़े कुत्ते का भौंकना, हीटर का शोर, रसोई में बर्तनों का खटकना, जेनरेटर की गड़गड़, सब्जीवाले की पुकार, मोबाईल की घंटी व ऐसी कई और आवाजें मिलकर कमरे का ध्वनि वातावरण परिभाषित करती थीं। यह वातावरण इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि बच्चे का कान इन सब ध्वनियों के बीच टी.वी. की आवाज पर ध्यान केंद्रित कर रहा था।

बच्चे टी.वी. देखते वक्त आरामदायक कपड़ों में होते थे। वे सोफे या बिस्तर पर आल्ती-पाल्ती मारकर बैठते थे। कभी-कभी कम्बल भी ओढ़ लिया करते थे। एक धारावाहिक के दौरान उनकी बैठने की मुद्रा लगातार बदलती रहती थी। एक पल वो बैठे होते थे तो दूसरे ही पल वो लेट जाते थे। उनके बैठने का स्थान भी बदलता रहता था। कुछ देर के लिए वह सोफे पर हैं, तो कुछ देर बाद रसोई में चले गए, वापस आए और बिस्तर पर बैठ गए। जब वह टी.वी. देख रहे होते थे, तब वह अपनी नजर स्क्रीन पर से नहीं हटाते थे। उनके चेहरे के भाव ज्यादा नहीं बदलते थे, बस कभी-कभी हंसी आ जाती थी। कभी वह खुद से ही बातें करते थे। कभी कोई व्यक्ति कमरे में चलते-फिरते, टी.वी. और बच्चे के बीच में आ जाता था। बच्चों ने स्वीकारा कि अगर टी.वी. देखते वक्त कोई और सदस्य अपनी ही वार्तालाप में मग्न हो, तब भी उन्हें ज्यादा परेशानी नहीं होती।

इन सब गतिविध्यिों से यह ज्ञात होता है कि टी.वी. कैसे आरामदायक स्थिति में देखा जाता है। सिर्फ मानसिक ही नहीं, एक धारावाहिक देखने के दौरान शारीरिक लय भी एक समान नहीं रहती। टी.वी. देखते वक्त बच्चे अपने शरीर व मस्तिष्क पर ज्यादा दबाव नहीं डाल रहे थे।

समान्तर (Parallel) गतिविधियां

टी.वी. देखना एक एकल गतिविधि नहीं थी। टी.वी. देखने के साथ-साथ बच्चे दूसरे कार्य भी कर रहे थे। उन्होंने बताया कि वह टी.वी. देखने का समय घर के छोटे-छोटे काम खत्म करने में भी इस्तेमाल करते थे। जैसे कि माता-पिता की मदद करना, अपना बिस्तर तैयार करना, सब्जी काटना आदि। ज्यादातर बच्चों ने कहा कि वह यह समय अपने अगले दिन के विद्यालय की तैयारी करने के लिए उपयोग करते हैं। जैसे कि बैग लगाना, ड्रैस रखना व गृह कार्य करना। उन्होंने बताया कि वह कभी-कभी धारावाहिक देखते समय खाना भी खाते थे। अवलोकन के दौरान भी यह पाया गया कि भोजन खाना, सब्जियां काटना, दूध-चाय पीना, मां का खाना बनाना, चीजों का

लेन-देन, फोन पर बात करना, मोबाईल फोन पर खेलना, पानी लाना, दरवाजे की खटखट का जवाब देना आदि यह सभी क्रियाएं टी.वी. देखने के साथ-साथ हो रही थीं।

इससे यह बात निकल कर आती है कि कैसे टी.वी. ने बच्चों के घरों में अपनी एक जगह बना ली है। जैसे घर के अनेक काम साथ में किए जाते हैं, वैसे ही धारावाहिक देखते समय भी अन्य काम साथ में हो जाते हैं। एक सवाल यह भी उठता है कि क्या बच्चों का मस्तिष्क सिर्फ टी.वी. पर दिखाई दे रहे दृश्य पर केंद्रित रहता है या वह एक साथ हो रही अनेक गतिविधियों के बीच समन्वय भी बनाए रखता है।

“ टी.वी. देखना एक ऐसी प्रक्रिया भी साबित हुई जहां लिंग व्यवहार के अनुसार भूमिकाएं निभाई गईं। अगर टी.वी. पर धारावाहिक का दृश्य चल रहा है और कुछ कार्य आ गया, तो उस कार्य को करने कौन उठेगा? ज्यादातर बेटियां। माता उन्हें निर्देश देती थी कि रसोई से पानी या खाना खाने के लिए ले आए, जबकि बेटा वहीं पर बैठा टी.वी. देखता रहता था। ”

टी.वी. देखनाः एक पारिवारिक गतिविधि

टी.वी. देखना एक पारिवारिक गतिविधि थी। सभी परिवार वाले साथ में मिलकर धारावाहिक देखते थे। बच्चों के मुताबिक माता-पिता कभी साथ होते थे, कभी नहीं, लेकिन उनके भाई-बहन हमेशा उनके साथ बैठकर टी.वी. देखते थे। किसी भी बच्चे ने एक पूरा धारावहिक बिना किसी से बातचीत किए नहीं देखा। परिवार के बीच में धारावाहिक व अन्य मुद्दों को लेकर छोटे-मोटे संवाद होते रहते थे। जैसे कि, ‘‘इतनी स्ट्रांग बॉडी किसी की होती है क्या?’’ और भाई का यह संवाद- ‘‘यह सच क्यों नहीं बोलती?’’

और बहन का यह संवाद- ‘‘नहीं बताएगी।’’

सब मिलकर कुछ दृश्यों पर हंसते थे तो कुछ पर अफसोस जाहिर करते थे। एक दृश्य में जब सास अपनी बहू पर चिल्ला रही थी तो सभी ने मिलकर हंसी उड़ाई। या जब ‘बुरे’ किरदार का मजाक बन रहा था तब सब हंसे और बोले, ‘‘बेइज्जती कर दी’’। धारावाहिक देखने के दौरान खाना भी खाया जाता था। जैसे कि एक बार पिता ने एक नई सब्जी पकाई थी, और सबसे पूछा, ‘‘क्यों! सही है न। बताओ क्या-क्या डाला है?’’ बच्चे माता-पिता से ज्यादा अपने भाई-बहन से वार्तालाप कर रहे थे। जैसे कि मोबाईल के अंदर क्या है, चिप्स के पैकिट पर अनबन या विज्ञापन के दौरान कौन सा कार्यक्रम देखें। टी.वी. देखना एक ऐसी गतिविधि नहीं थी जिसकी चर्चा बच्चे अपने दोस्तों और सहपाठियों के साथ करते थे। बच्चों को यह मालूम भी नहीं था कि उनके कौन-कौन से दोस्त वही धारावाहिक देखते हैं जो वो खुद देख रहे थे। उन्होंने यह भी स्वीकारा कि वह धारावाहिक के बारे में दोस्तों के साथ जिक्र नहीं करते थे। अतः टी.वी. देखना एक ऐसा मौका था जहां परिवार, खासकर भाई-बहन साथ मिलकर प्रक्रिया का हिस्सा बनते थे, अपने अनुभव साझा करते थे। धारावाहिक की कहानी के अर्थ का निर्माण मिल-जुल कर हो रहा था। एक तरफ धारावाहिक की कहानी पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में आगे बढ़ती थी तो दूसरी तरफ बच्चे इस कहानी को खुद के परिवार के साथ समझते थे।

टी.वी. देखने के दौरान सामाजिक अंतःक्रिया

टी.वी. देखने के दौरान प्रभुत्व (authority) भी जताया जाता था। रिमोट कौन संभालेगा? चैनल कौन बदलेगा? कौन तय करेगा की कब कौन-सा कार्यक्रम चलेगा? सभी घरों में उम्र में सबसे बड़ा व्यक्ति या कोई पुरुष ही रिमोट संभालता था। पूरे धारावाहिक के दौरान वह रिमोट को या तो अपने हाथ में रखते थे या फिर विज्ञापन के दौरान हाथ में लिया करते थे। लेकिन उनकी उपस्थिति में उनके अलावा रिमोट का उपयोग कोई और नहीं करता था। अगर पिता मौजूद हैं तो रिमोट पिता के हाथ में था, बड़ी बहन है तो उसके हाथ में था, अगर मां, बहन और बढ़ा भाई तीनों साथ हैं तो भाई के हाथ में था। विज्ञापन के दौरान पिता टी.वी. पर समाचार लगा लेते थे या भाई/बहन अपने पसंदीदा कार्यक्रम लगा लेते था। एक बार एक दृश्य के दौरान बच्चा कहानी को साथ में बोलता जा रहा था, तो उसकी मां ने उसको थप्पड़ मारा और चुप रहने के लिए धमकाया। टी.वी. देखना एक ऐसी प्रक्रिया भी साबित हुई

जहां लिंग व्यवहार के अनुसार भूमिकाएं निभाई गईं। अगर टी.वी. पर धारावाहिक का दृश्य चल रहा है और कुछ कार्य आ गया, तो उस कार्य को करने कौन उठेगा? ज्यादातर बेटियां। माता उन्हें निर्देश देती थी कि रसोई से पानी या खाना खाने के लिए ले आए, जबकि बेटा वहीं पर बैठा टी.वी. देखता रहता था। एक घर में नानी और मां दोनों ही बेटे को खूब लाड़ दे रही थीं ताकि वो खाना खाले, जबकि वह टी.वी. पर ध्यान केंद्रित कर रहा था।

सभी बच्चों के परिवार में शोधकर्ता की मेहमान नवाजी की भी कोशिश की गई थी। धारावाहिक चल रहा था पर इसी बीच में कभी माता तो कभी बच्चे ने कुछ खाने के लिए दिया। शोधकर्ता से बातचीत भी की, प्रश्न भी पूछे।

इन सभी बातों से यह पता चलता है कि टी.वी. देखते वक्त भी बच्चे अपनी सामाजिक भूमिकाओं में बंधे हुए होते हैं। वह प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं, लिंग व्यवहार करते हैं यहां तक कि एक मेजबान की भूमिका भी निभाते हैं। यह सभी भूमिकाएं वैसे ही निभाई जा रही थीं जैसे कि पारंपरिक तौर पर मौजूद हैं। एक और गहरी बात जो निकल कर आती है वह यह कि धारावाहिक की बुनियाद भी यही पारंपरिक सामाजिक भूमिकाएं होती हैं। ऐसे में धारावाहिक टी.वी. में आ रही एक असत्य वास्तविकता नहीं रह जाता, बल्कि घर परिवार के यथार्थ के साथ सतत रूप में शामिल हो जाता है। (Not discrete part of reality but becomes continuous with child's reality).

निष्कर्ष

टी.वी. पर धारावाहिक देखना एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में सामाजिक, शारीरिक व मानसिक अंतःक्रियाएं होती हैं। सामाजिक स्तर पर देखें, तो टी.वी. देखना एक ऐसी क्रिया साबित हुई जहां परिवार साथ में बैठता है और अनुभवों को साझा करता है। बातचीत, खाना, घर के काम, प्रभुत्व यह सभी इस प्रक्रिया के दौरान परिवार में साझा हुए। यह सभी अनुभव पारिवारिक तथा लिंग व्यवहार की भूमिकाओं के अंतर्गत बुने गए। एक मां टी.वी. देखते वक्त भी मां थी और एक बच्चा बेटी या बेटा था। शारीरिक स्तर पर टी.वी. और बच्चों की आंख व कान के बीच अंतःक्रिया हुई। कमरे में मौजूद सभी नजारों और ध्वनियों के बीच आंख ने टी.वी. की स्क्रीन तथा कान ने उसकी आवाज पर ध्यान केंद्रित किया। बच्चों ने धारावाहिक की कहानी को कभी एक लय में नहीं, बल्कि तोड़-तोड़ कर देखा। इस कारण उनके मस्तिष्क ने कहानी के कुछ हिस्से चुने जिस पर उन्होंने सबसे ज्यादा ध्यान दिया। यह सभी वो हिस्से थे जिनमें हीरो-हीरोईन किसी विवाद से जूझ रहे थे। विज्ञापनों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। बच्चों ने अनेक गतिविधियों जैसे भोजन करना और बिस्तर बिछाना और टी.वी. देखने की प्रक्रिया में समन्वय भी बिठाया।

टी.वी. ने बच्चों के घरों में एक स्थाई जगह बना ली थी। टी.वी. देखने के लिए बच्चे कोई विशिष्ट तैयारी नहीं करते थे। टी.वी. देखना एक ऐसी प्रक्रिया बन गई थी जिसमें बच्चे दूसरी कई क्रियाएं भी साथ में कर लेते थे। टी.वी. जिस पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा था उसके तहत धारावाहिक की कहानी एक असतत् वास्तविकता नहीं बल्कि बच्चों के यथार्थ का सतत हिस्सा बन गई थी। ◆

लेखिका परिचयः दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.एड. करने के बाद रीजनल रिसोर्स सेंटर फॉर एलिमेंट्री एजुकेशन, दिल्ली विश्वविद्यालय में सेंटर इंचार्ज के पद पर कार्यरत हैं और साथ में उच्च शिक्षा के लिए तैयारी कर रही हैं।